प्रात: क्लास

क्लास ओम् शान्ति 7-3-67

रिवाइज:-इस पाप की दुनिया से। यह है पढ़ाई। हरेक बात समझनी है। और जो भी सतसंग आदि है वह सब अहैं भक्ति मार्ग की। भक्ति करते2 वेगर बन गये हैं। वह वेगर्स, फकीर और है। तुम और किसम के वेगर हो। तुम अमीर थे, अभी फकीर बने हो। यह किसको भी पता नहीं कि हम अमीर थे। तुम ब्राह्मण बच्चे जानते हो हम विश्व के मालिक अमीर थे। अमीरचन्द से फकीर चन्द बने हैं। अब यह है पढ़ाई। जिसको अच्छी रीत पढ़ना है। धारण करना है। और धारण कराने की कोशिश करनी है। अविनाशी ज्ञान रत्न धारण करनी है। आत्मा बसंत है ना। आत्मा ही धारण करती है। शरीर तो विनाशी है। काम की जो चीज नहीं होती है उसको जलाया जाता है। शरीर भी काम का न रहता है तो उसको जलाया जाता है। आत्मा को तो नहीं जलाते। हम आत्मा हैं। जब से रावण राज्य शुरू हुआ है तो मनुष्य देहाभिमान में आ गये हैं। मैं शरीर हूँ यह पक्का हो जाता है। आत्मा तो अमर है। अमरनाथ बाप आते आत्माओं को अमर बनाते हैं। वहाँ तो अपने समय पर अपनी मर्जी से एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं। क्योंकि आत्मा मालिक है ना। जब चाहे तब शरीर छोड़े। वहाँ शरीर की आयु भी बड़ी होती है। सर्प का भी मिसाल है। अभी तुम जानते हो यह तुम्हारे बहुत जन्मों के अंत के जन्म की पुरानी खल है। 84 जन्म पूरे लिए हैं। कोई की 60,70 जन्म भी हैं। कोई की 50 है। त्रेता में जब आयु कुछ न कुछ कम होती है। सतयुग में फुल आयु होती है। अभी पुरुषार्थ करना है। कि हम पहले2 सतयुग में आवें। वहाँ ताकत रहती है। तो अकाले मृत्यु नहीं होता। ताकत कम होती है तो आयु भी कम हो जाती है। अब जैसे बाप सर्वशक्तिवान है। तुम्हारी आत्मा को भी शक्तिवान बनाते हैं। एक तो पवित्र बनना है। और याद में रहना है। तब शक्ति मिलती है। बाप से शक्ति का वर्सा तुम लेते हो। पापात्मा तो शक्ति ले न सके। पुण्यात्मा बनती है तो शक्ति मिलती है। यह ख्याल करो हमारी आत्मा सतोप्रधान थी। हमेशा शुभ भावना रखनी चाहिए। ऐसे नहीं कि सब थोड़े ही सतोप्रधान बनेंगे। कोई तो सतो भी होंगे। नहीं। अपने को समझना चाहिए पहले2 हम सतोप्रधान थे निश्चय से ही सतोप्रधान बनेंगे। ऐसे नहीं कि हम कैसे सतोप्रधान बन सकेंगे। फिर ठहर जाते हैं। याद की यात्रा पर नहीं रहते। जितना हो सके पुरुषार्थ करना चाहिए। अपने को आत्मा समझ सतोप्रधान बनना है। इस समय सभी मनुष्य मात्र तमोप्रधान हैं। तुम्हारी आत्मा भी तमोप्रधान है। अब आत्मा को सतोप्रधान बनना है। बाप को याद से ही सतोप्रधान बनेंगे। साथ2 सर्विस भी करेंगे तो ताकत मिलेगी। समझो कोई सेन्टर खोलते हैं तो बहुतों की आशीर्वाद उनके ऊपर आवेगी। मनुष्य धर्मशाला आदि बनाते हैं कि मनुष्य आये विश्राम पावें। आत्मा खुश होगी ना। रहने वालों को फरहत मिलती है। तो उनकी आशीर्वाद बनाने वाले को मिलती है। फिर नतीजा क्या होगा। दूसरे जन्म में वह सुखी रहेगा। मकान अच्छा मिलेगा। मकान का सुख मिलेगा। ऐसे नहीं कि कब बिमार न होगा। सिर्फ मकान अच्छा मिलेगा। हास्पिटल खोले होंगे तो तन्दुरुस्ती अच्छी रहेगी। युनिवर्सिटी खोले होंगे तो पढ़ाई अच्छी होगी। स्वर्ग में तो यह हास्पिटल आदि होते नहीं। यहाँ तुम पुरुषार्थ से 21 जन्मों की प्रालब्ध बनाते हो। बाकि वहाँ हास्पिटल, कोर्ट, पुलिस आदि कुछ नहीं होगा। अभी तुम चलते हो सुखधाम में। वहाँ वजीर भी होता नहीं। ऊँच ते ऊँच खुद महाराजा महारानी, वे वजीर की राय थोड़े ही लेंगे। राय तब मिलती है जब बेवकूफ बनते हैं। जब विकारों में गिरते हैं। रावण राज्य में बिलकुल ही तुच्छ बुधि, बेवकूफ बन जाते हैं। अभी तुच्छ बुधि चल रहे हैं इसलिए विनाश का रास्ता ढूँढ रहे हैं। खुद समझते हैं हम भारत को बहुत ऊँच बनाते हैं। परन्तु यह तो और ही नीचे गिरते जाते हैं। अब विनाश सामने खड़ा है। तुम बच्चे जानते हो अभी हम को घर जाना है। हम भारत की पुरानी सेवा कर अपना राज्य स्थापन करते हैं। फिर हम राज्य करेंगे। गाया भी जाता है परलो पलदर। फादर टू सन। सन शोज़ फादर। बच्चे जानते हैं शिव बाबा ब्रह्मा के तन में आये हमको पढ़ाते हैं। समझाना भी ऐसे है। हम ब्रह्मा को भगवान या देवता नहीं मानते तो पतित है ना। बाप ने पतित शरीर में प्रवेश किया है। झाड़ में देखो ऊपर चोटी में खड़ा है

पतित हैं फिर नीचे पावन बननेलिए तपस्या करके देवता बनते हैं। तप ये करने वाले है ब्राह्मण। तुम ब्रह्मा कुमार कुमारियांxx सब राजयोग सिख रहे हो। कितना क्लियर है। इसमें याग बड़ा अच्छा चाहिए। याद में न xx रहेंगे तो मुरली में वह ताकत न रहेगी। ताकत मिलती है शिव बाबा की याद से। याद से ही तुम सतोप्रधान बनेंगे। नहीं तो सजा खाकर फिर कम पद पायेंगे। मुल बात है याद की। जिसको ही भारत का प्राचीन योग कहा जाता है। नालेज का किसको पता नहीं है। आगे के ऋषि-मुनि कहते आये रचता और रचना की आद मध्य अंत को हम नहीं जानते। तुम भी आगे कुछ नहीं जानते थे। भक्ति मार्ग में रुलते रहते थे। क्योंकि भक्ति मार्ग में विकार भी है। वाम मार्ग में बिलकुल सर का काले हो जाते हैं। इन 5 विकारों ने ही तुमको बिलकुल वर्थ नाट अ पेनी बनाया है। यह पुरानी दुनिया जल कर खतम हो जानी है। कुछ भी रहने का नहीं है। तुम भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार भारत को स्वर्ग बनाने तन, मन, धन से सेवा करते हो। प्रदर्शनी में भी तुम से पूछते हैं तो बोलो हम ब्रह्माकुमारियां अपने तन, मन, धन से रामराज्य श्रीमत पर स्थापन कर रहे हैं। गांधी तो ऐसे नहीं कहते थे कि श्रीमत पर रामराज्य स्थापन करते हैं। यहां तो इसमें श्री, श्री 108 बाप बैठे हैं ना। 108 की माला भी बनती है। माला तो बहुत बड़ी बनती है, उसमें 8, 108 अच्छी मेहनत करते हैं, नम्बरवार तो फिर बहुत हैं। जो अच्छी रीत मेहनत करते हैं उनकी पूजा होती है तो शाली ग्रामों की भी पूजा होती है ना। जब कुछ सर्विस की है तब तो पूजा होती है। तुम ब्राह्मणों की सेवा भारी हो। सब की आत्मा को जगाने वाले हो। मैं आत्मा हूं यह भूलने से देह अभिमान आ जाता है। मैं फलाणा हूं। इन्दिरागांधी हूं। उनको यह थोड़े ही पता है मैं आत्मा हूं। यह मेरा शरीर का नाम है। हम आत्मा कहां से आती है यह भी कोई को जरा भी ख्याल नहीं। यहां पार्ट बजाते2 शरीर का भान पक्का हो गया है। बाप समझाते हैं बच्चे अब गफलत छोड़ो। माया बड़ी जबरदस्त है। तुम युद्ध के मैदान में हो। तुम आत्माभिमानी बनो। आत्माओं और परमात्मा का यह मेला है। इस मेले पर कोई दुकाने आद तो नहीं है। यह तो परमात्मा और आत्माओं का मेला लगता है। गायन भी है आत्मा और परमात्मा अलग रहे बहुकाल। इनका भी अर्थ वह नहीं जानते। तुम अभी जानते हो। हम आत्मायें बाप के साथ रहने वाले हैं। वह आत्माओं का घर है। बाप भी वहां है। उनका नाम है शिव शिव जयन्ती भी गाई जाती है। दूसरा कोई नाम देना ही नहीं चाहिए। बाप कहते हैं मेरा असली नाम है कल्याण कारी शिव। कल्याण कारी रुद्र नहीं कहेंगे। कल्याण कारी शिव कहते हैं। काशी में भी शिव का मंदिर है ना। वहां साधु लोग मंत्र जाप जपते है। शिव काशी विश्व नाथ गंगा। अब बाप समझाते हैं शिव जो काशी के मंदिर में बिठाया है उनको कहते हैं विश्व नाथ। अब मैं तो विश्व नाथ हूं नहीं। विश्व के नाथ तुम बनते हो। मैं बनता ही नहीं हूं। भक्ति मार्ग में हरेक अक्षर में झूठ है। विश्व का नाथ भी तुम बनते हो। और ब्रह्म तत्व के नाथ भी तुम बनते हो। तुम्हारा वह घर है, वह राजधानी है। मेरा घर तो एक ही है ब्रह्म तत्व। मैं स्वर्ग में आता नहीं हूं। न मैं नाथ बनता हूं। मेरे को कहते ही है शिव बाबा। मेरा पार्ट पतितों को पावन बनाना है। बाप सबसे जास्ती सर्विस करते है। भूत पलितों को पावन बनाते हैं। सिक्ख लोग कहते हैं मूत पलिती कपड़ धोये- परन्तु अर्थ नहीं समझते। महिमा भी गाते हैं उनका। ओंकार—अजोनी माना जन्म मरण रहित। मनुष्य तो 84 जन्म लेते हैं, बाप कहते हैं मैं जन्म नहीं लेता हूं। मैं इन में प्रवेश करता हूं। इनकी आत्मा जानती है बाबा मेरे साथ इक्ठा बैठा हुआ है। तो भी घड़ी2 याद भूल जाते हैं। इस दादा की आत्मा कहती है मुझे बहुत मेहनत करनी पड़ती है ऐसे नहीं कि मेरे में बैठा हुआ है तो याद अच्छी रहती है, नहीं। भल एकदम इक्ठा है, जानता हूं मेरे पास है, इस शरीर का वह जैसे मालिक है फिर भी भूल जाता हूं। बम्बई में मकान लिया। सारा मकान किराया पर दिया। बाकि एक कमरे में मालकिन बैठी थी। बाबा को भी यह मकान दिया है रहने के लिए। बाकि एक कोने में मैं बैठता हूं। वह आदमी हुआ ना। विचार करता हूं बाजु में मालिक बैठा है। तो भी याद नहीं कर सकता हूं। माया बड़ी जबरदस्त है।

कितनी कोशिश करता हूं। भोजन पर बैठता हूं, समझता हूं यह रथ उनका है। वे इनकी सम्भाल करते हैं। शुद्ध वावा खिलाते भी हैं। मैं उनका रथ हूं, कुछ तो खाते होंगे। इस खुशी में खाता हूं। दो चार मिनट याद फिर फिर भूल जाता हूं। तब समझता हूं बच्चों को कितनी मेहनत लगती होगी। इसलिए बाबा समझाते रहते है जितना हो सके बाबा को याद करो। बहुत2 फायदा है। यहां तो थोड़ी ही बात में तंग हो पढ़ाई को छोड़ देते हैं। बाबा बाबा 2कह फिर फारकती देते देते हैं। बहु को अपना बनावन्ती, ज्ञान सुनावन्ती, पढ़न्ती, दिव्य-दृष्टि से स्वर्ग देखन्ती, रास करन्ती, अहो मम माया मुझे फारकती देवन्ती, भागन्ती। जो विश्व का मालिकबनाते हैं उनको फारकती दे देते हैं। विलायत में बहुत फारकती देते हैं। बड़े2 नामी ग्रामी भी फारकती दे देते हैं। उपर से आर्डरस मिलती है तब फारकती देते है। बाहर में बहुत रिवाज है। यहां तो बहुत गंद है। अभी तुमको गटर से निकालते है। रास्ता बताया जाता है। ऐसे नहीं कि हाथ से पकड़ ले जाना है। इन आंखों से तो अंधे नहीं हैं। हां ज्ञान का तीसरा नेत्र न होने के कारण अंधे हैं। अभी आत्मा कहती है हमारी आंखे खुल गई। ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। चित्रों मेंफिर देवताओं कोयहां तिसरा नेत्र दिखाते हैं। परन्तु देवताओं को है नहीं। ज्ञान का तीसरा नेत्र तुमको मिलता है। तुम सृष्टि की आद, मध्य अन्त को जानते हो। यह 84 का चक्र बुधि में फिरना चाहिए। तुम्हारा नाम है स्वदर्शन चक्रधारी। यह भी बाप समझाते है। एक बाप को ही याद करना है। दूसरे कोई की याद न रहे। पिछड़ी में यह अवस्था रहे, जैसे स्त्री का पुरुष के साथ लव होता है। जब वह मरता है तो उनके पिछाड़ी चिता पर बैठ जाती है। बस मैं इस पति के साथ फिर मिलूं। वह भावना पुरी होती है, परन्तु नाम रूप, देश-काल सब बदल जाता है। तो उनका कितना लव रहता है। यहां तुमको कोई उस चिता पर नहीं चढ़ना है, तुमको ज्ञान चिता पर बैठ बाबा की याद में रह शरीर छोड़ना है। फिर भी वह पतियों का पति है। बापों का बाप है। कितना उन पर लव होना चाहिए। इतना लव है बाप पर? उठते-बैठते उनको याद करना है। स्त्री का पति साथ बहुत प्रेम होता है। पति का भी स्त्री के साथ प्रेम होता है। वह प्रेमवती तो यह प्रेमवता होता है। दुसरे जन्म में बहुत प्यार में रहते हैं। ऐसे बहुत घर होते हैं। स्त्री-पुरुष तथा परिवार बड़े प्यार से आपस में रहते हैं। जैसा स्वर्ग लगा रहता है। 5-6 बच्चे इकठे रहते हैं। सुबह को उठ सब पुजा में बैठते। कोई झगड़ा आद घर में नहीं। एकरस रहते हैं। यहां तो एक ही घर में कोई राधास्वामी, कोई कोई फिर धर्म को भी नहीं जानते। थोड़ी बात पर नाराज़ हो पड़ते हैं। तो बाप कहते हैंइस अन्तिम जन्म पुरा पुरुषार्थ करना है। अपना पेशा भी सफल कर अपना कल्याण करो तो भारत का भी कल्याण होगा। तुम जानते हो कि हम अपनी राजधानी श्रीमत पर फिर से स्थापन करते हैं। याद की यात्रा से और सृष्टि की आद मध्य अन्त को जानने सेहम चक्रवर्ती राजा बन जावेंगे। फिर उतरना शुरू होगा। फिर अंत में बाबा के पास आ जावेंगे। श्रीमत पर चलने से ही ऊंच पद पावेंगे। बाप कोई फांसी पर नहीं चढ़ाते। एक तो कहते है। पवित्र बनो। अपवित्र मनुष्य पवित्र देवताओं के आगे माथा टेकते है। तो पवित्र बन निर्विकारी बनना अच्छा है ना। इस समय सभी मनुष्य पतित है। जनावर फिर भी मनुष्य से अच्छा है। (मोर का मिसाल) कैसे आंसु से गर्भ होता है। कहते है यह भारत का ऊंच से ऊंच यह पक्षी हैं। खुबसुरत भी बहुत हैं। डांस भी अच्छा करते हैं। उनको नेशनल बर्ड कहते है। आजकल तो देखोहनुमान बंदर आद को भी पूजा करते रहते है। जनावर की पूजा करनी है तो सबसे अच्छा मोर है। इनकी पूजा करनी चाहिए। परन्तु अक्ल है नहीं। अभी तुम्हारी पारस बुधि बनती है। यहां है पत्थर बुधि। क्योंकि पतित है ना। वहां कोई पतित होता नहीं। दैवी देवताएं भी बहुत थोड़े हैं। फिर आते2 वृधि होती है। देवताओं का है छोटा झाड़। 9लाख। फिर कितनी वृधि हो जाती है। आत्माएं सब उतरते रहते हैं। अभी तो साढ़े तीन सौ करोड़आत्माएं सभी एकटरस हैं। यह बना बनाया खेल है। बाप बैठ समझाते है। शुरू से

लेवर हैं। पहले2 आदी सनातन देवी देवता धर्म। फिर वह ही आधा कल्प बाद वाम मार्ग में जाने से पतित बन जाते हैं। इसलिए अपन को देवी देवता कहलाये न सके। उन्हों की चित्र बनाये नमन करते हैं। अब बाबा कहते हो आदी सनातन तो देवी देवता धर्म था। फिर हिन्दु कहां से आये। और जो धर्म है, जैसे क्रिश्चन धर्म स्थापन हुआ तो वह अन्त तक चला आ रहा है। वह ही नाम चला आता है। यह देवी देवता धर्म वालों को फिर हिन्दु नाम कैसे आ गया। हम तो हैं आदी सनातन देवी देवता धर्म के। तुम इतना समझाते हो तो भी समझते नहीं। देवी देवतायें शिव के मालिक थे। वह भी कोई की बुधि में नहीं है। अभी तुमको बाप कितना समझदार बनाते हैं। समझदार मनुष्य सालवेन्ट होते हैं। बेसमझ मनुष्य इन सालवेन्ट होते हैं। बाप कहते हैं तुम भारतवासियो ने 84 जन्म लिये हैं। 84 लाख का कितना बड़ा गपोड़ा लगाये दिया हैं। अभी तुम बच्चे इन सभी बातो को समझते हो। तुम तो कहते हो कहां जल्दी स्वर्ग बन जाये तो सुखी हो जावें। बाबा अजन देरी है क्या? बाप कहते हैं तुम याद ही पुरी नहीं करते हो। देरी तुम्हारी है। मैं तो आया हूं तुमको ले जाने। तुम घड़ी2 भूल जाते हो। मैं तुमको शिव का मालिक बनाता हूं तुम मुझे घड़ी 2 भूल जाते हो। भल कोई लिखते हैं बाबा हम 5 घंटा याद में रहे। गपोड़ा लगाये देते हैं। यहां बैठे भी बुधि और2 तरफ चली जाती है। तुम यहां बैठे हो तो भी समझते हो× शिव बाबा परमधाम से आये हमें सुनाते हैं। बुधियोग वहां रहना चाहिए। यहां उतर न आना चाहिए। जहां जाना है उनका ही नाम गाया है। शिव बाबा फिर चले जावेंगे। डि×डेस्टीनेशन (मंजिल) को याद करना है। घर और बाप को याद करो। घर कोई बाप नहीं है। तुम घर के मालिक स× कोयाद करते हो। यह समझो हमको स्वदर्शन चक्रधारी बनना है। तुम सुखी भी रहेंगी। तुम जानते हो अभी वह अवस्था हुई नहीं है। इसलिए कहते है बाबा अभी लड़ाई न लगे तो अच्छा है नहीं तो कम 2 इन [illegible] बच्चे रह [illegible] जानते हैं बस देखें ××× [illegible] नहीं लगता तो और बच्चों को क्या लगता होगा। इनके उपर तो बहुत रेस्पान्सिबुलिटी है! इतने ढेर बच्चे हैं। कितना ख्यालात करनी पड़ती है। घर की सम्भाल बाप को ही रखनी होती है ना। बच्चों को भी कहते हैं कोई भी बात में राय आदि दो कि यह होना चाहिए तो बताओ। घर के मालिक हो ना। यहां के ×××× भी मालिक तो कहां के भी मालिक हो। देख रेख करना चाहिए। बाबा यह होता चाहिए। विलायत में तो बहुत ×× बड़े2 घर होते हैं डेढ़ लाख की मोटर में चढ़ते हैं। वहां तो इतनी मिलकियत है बात मत पूछो। जैसे सिंगापुर के मालिक हो। अभी तुम देखो ××× कहो मालिक बनते हो। शिव की। सो भी 2। जब भी लिए रेस पुरी करनी चाहिए। हम पुरा वर्सा लेवे। बाबा समझाते रहते हैं घर में सेन्टर खोलो। ब्रह्मणियां तो सर्वेन्ट हैं। सब को रास्ता बताने सेवा करते रहते हैं। खुदा आ कर भारत को स्वर्ग बनाते हैं। तो यह बच्चे भी ×× खिजमत करते हैं। भारत सुखी होगा बाकी सब शांतिधाम चले जावेंगे। बाप है सबसे बड़ी अर्थोटी। इन से बड़ी कोई अर्थोटी होती नहीं। वह है सब आत्माओं का बाप, यह है सभी मनुष्यों का बाप। दोनो बाप तुम्हारे सर्विस में हैं। रूहानी और जिसमानी दोनों बाप सर्विस में हैं। रूह भी प्युअर तो शरीर भी प्युर बनेगा। तुम बच्चे जानते हो हम बाप से पढ़ रहे हैं। बाप है निराकार। इनको याद नहीं करना है। ××× फोटो भी निकालने नहीं देते। याद तो तुमको शिव बाबा को करना है। आत्मा को बाप को याद करना है। इस दादा को भी भूल जाना है। आत्मा की सगाई है शिव बाबा से। दलाल को थोड़े ही याद करना है। इसलिए इनका फोटो भी नुकसान कर है। त्रिमूर्ति का भी चित्र रखने से सब याद आ जावेंगे। इसलिए शिव बाबा का ही चित्र अच्छा है। यह तो ज्ञान बुधि में है शिव बाबा कोई इतना बड़ा है थोड़े ही। अगर महिन रूप से याद नहीं कर सकते है तो अच्छा बड़ा रूप ही सही।। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुड मानिंग। ओमशांति।